

सत्यनिष्ठा

मत्ती 22:16 अतः उन्होंने अपने चेलों को हेरोदियों के साथ उसके पास यह कहने को भेजा, कि हे गुरु; हम जानते हैं, कि तू सच्चा है; और परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से सिखाता है; और किसी की परवा नहीं करता, क्योंकि तू मनुष्यों का मुंह देखकर बातें नहीं करता।

अध्याय का ध्यान:

- एक प्रभावशाली अगुवे का मूल उसकी सत्यनिष्ठा होती है।
- एक सत्यनिष्ठा वादी बनने के उपकरण खोज निकालिये।
- लोग कभी ऐसे व्यक्ति के पीछे नहीं चलेंगे जिन पर वो विश्वास अथवा भरोसा नहीं कर सकते।
- सत्यनिष्ठा में काम के प्रति , कठिनायियों से जूझना (उदहारण - भय, क्रोध, चिड़चिड़ा) व ईमानदारी कि भक्ति होनी चाहिए।

यह क्या है?

- हर क्षेत्र में सत्यनिष्ठा ही परमेश्वर के अनुग्रह का मूल मंत्र है।
 - जब आपका विश्वास वचन और कर्म सम्पूर्ण हो और आपस में मिलाप खाया तो आपमें सत्यनिष्ठा है।
 - झूठ का आभास
- यह हमको अनुमान लगाने में सहायता करता है कि हम किसी भी परिस्थिति में लोगों कि सांगत में और किसी भी जगह कि परीक्षा में कैसे रहेंगे।
 - सत्यनिष्ठा विश्वास बनती है।
 - सत्यनिष्ठा के प्रभावशाली मूल्य होते हैं।
 - सत्यनिष्ठा दर्जों को ऊँचा करने में सहायता करता है।
 - सत्यनिष्ठा से मजबूत प्रतिष्ठा बनती है केवल छवी नहीं।
 - सत्यनिष्ठा का मतलब है दूसरों को मार्गदर्शन करने से पहले स्वयं उसपर चलना।
 - सत्यनिष्ठा एक अगुवे को सच्चा बनती है केवल चालाक नहीं।
 - सत्यनिष्ठा मुश्किल से जीती उपलब्धि है।
- एक व्यक्ति जिस प्रकार जीवन के परिस्थितियों का सामना करता है उससे उसके चरित्र का पता चलता है।
- संकट चरित्र नहीं बनाता है पर उसको प्रदर्शित करता है।
- आपका चरित्र आपकी निजी सत्यनिष्ठा को दर्शाता है।
- आपके सच्चे चरित्र कि परख तब ही हो पाएगी जब आप को पता हो कि आप काम को कैसे करते हैं जब आप जानते हैं कि आपको कोई नहीं देख रहा है।

1. चरित्र केवल बातें करना नहीं होता।

- कोई भी बोल सकता है उसमें सत्यनिष्ठा है पर उसके कर्म उसके चरित्र कि सही पहचान कराते हैं।

2. गुण एक उपहार है परन्तु चरित्र एक चुनाव है।

- हमारे जीवन में कई चीजों पर हमारा अधिकार नहीं होता जैसे कि माता पिता, घर, पालन पोषण, गुण, पढ़न आदि।
- हमारे चरित्र पर भी हमें काबू नहीं रहता।
- जब भी हम चुनाव करते हैं हम अपने चरित्र कि रचना करते हैं।

3. चरित्र लोगों में टिकाऊ कामयाबी लाता है।

- चरित्रवान व्यक्ति का लोग आदर करेंगे और उनके पीछे चलेंगे।

4. लोग अपने चरित्र कि सीमाओं से ऊपर उठ नहीं सकते।

- जो लोग बिना चरित्र के कामयाबी हासिल करते हैं वह कष्टों और तनावों के आनों पर गिर जाते हैं।
- अहंकार , अकेलापन, जोखिम के अनुभव दूढ़ने वाला , व्यविचार।

इस पर विचार कीजिये।

- सत्यनिष्ठा वाले लोगों कि वफ़ादारी विभाजित नहीं होती वे दिखावा नहीं करते।
- उनका एक ही मन होता है डरना नहीं कुछ छुपाना नहीं।
- बिना हल कि हुई चरित्र कि दरारें समय के साथ अधिक गहरी हो और नाशक हो सकती हैं।
- अगर आपके जीवन में कमजोर चरित्र है तो आपको उस पर काम करना चाहिए।

Q: क्या हर बार आपके वचन और कर्म एक सामान है ?

मत्ती 22:16 अतः उन्होंने अपने चेलों को हेरोदियों के साथ उसके पास यह कहने को भेजा, कि हे गुरु; हम जानते हैं, कि तू सच्चा है; और परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से सिखाता है; और किसी की परवा नहीं करता, क्योंकि तू मनुष्यों का मुंह देखकर बातें नहीं करता।

- सत्यनिष्ठवादी व्यक्ति के वचन और कर्म हमेशा मेल खाते हैं।

Q: क्या आप हमेशा वोह करते हैं जो आप बोलते हैं कि मैं करूंगा ?

Q: क्या लोग केवल आपके वचनों पर भरोसा कर सकते हैं?

Q: किस क्षेत्र में बढ़ने के लिए आपको सबसे अधिक सहायता कि आवश्यकता है?

परमेश्वर कि सेवा में सत्यनिष्ठा

1) जब आप परमेश्वर में कि हुई सेवा के विषय में बताते हो तो ईमानदार रहो।

नीतिवचन 11:1 छल के तराजू से यहोवा को घृणा आती है, परन्तु वह पूरे बटखरे से प्रसन्न होता है।

- हमे अपने प्रार्थना गुठ कि कमजोरियों और ताकतों के विषय में ईमानदार रहना है।

रोमियो 15:1

निदान हम बलवानों को चाहिए, कि निर्बलों की निर्बलताओं को सहें; न कि अपने आप को प्रसन्न करें।

1 थिस्सलुनीकियों 5:14

और हे भाइयों, हम तुम्हें समझाते हैं, कि जो ठीक चाल नहीं चलते, उन को समझाओ, कायरों को ढाढ़स दो, निर्बलों को संभालो, सब की ओर सहनशीलता दिखाओ।

- हम जो मजबूत हैं कमजोरों को सम्भालना चाहिए। शायद यही कारण है कि हम मजबूत क्यों हैं।
- जब किसी व्यक्ति के साथ विशिष्ट रूप से संभोदन कर रहे हो तो सहनशील रहे।

2) केवल शिष्यों को ही बपतिस्मा दे।**मत्ती 3:5-8**

तब यरूशलेम के और सारे यहूदिया के, और यरदन के आस पास के सारे देश के लोग उसके पास निकल आए। 6 और अपने अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उस से बपतिस्मा लिया। 7 जब उस ने बहुतेरे फरीसियों और सदूकियों को बपतिस्मा के लिये अपने पास आते देखा, तो उन से कहा, कि हे सांप के बच्चों तुम्हें किस ने जता दिया, कि आने वाले क्रोध से भागो? 8 सो मन फिराव के योग्य फल लाओ।

- बपतिस्मा यूहन्ना को उन लोगों को जिन्होंने पूरी तरह से मन नहीं फिरिया उनका बपतिस्मा विलम्ब करने में कोई संकोच नहीं हुआ।

3) उसको निकाल दो जो समर्पित नहीं है।**1 कुरिन्थियों 5:11-13**

मेरा कहना यह है, कि यदि कोई भाई कहला कर, व्यभिचारी, या लोभी, या मूर्तिपूजक, या गाली देने वाला, या पियक्कड़, या अन्धेर करने वाला हो, तो उस की संगति मत करना; वरन ऐसे मनुष्य के साथ खाना भी न खाना। 12 क्योंकि मुझे बाहर वालों का न्याय करने से क्या काम? क्या तुम भीतर वालों का न्याय नहीं करते? 13 परन्तु बाहर वालों का न्याय परमेश्वर करता है: इसलिये उस कुकर्मों को अपने बीच में से निकाल दो।।।"

- समर्पण न होने वालों को परमेश्वर के पारिवारिक वृक्ष से निकलने पर अपने आप को दोषी न समझो।
- कलीसा कि सत्यनिष्ठा को बचाने के लिए यह आवश्यक है।
- अगर यह हमारे फल को कम करता है तो भी कर दो।

विचार विमर्श के लिए सवाल :

किस कारण अपने पहले अपने कर्तव्य को छोड़ दिया?

सबसे ज्यादा आपको बेईमानी करने का आवेश कब आया?

घर का काम : लिखिए कि किस प्रकार यह क्षेत्र आपके पुराने जीवन में ताकत या कमजोरी का काम करती थी। किसी से बात करिये जो आपको अच्छी तरह जनता हो और उनसे पूछिए कि आप सत्यनिष्ठा के क्षेत्र में कैसे हो? आप भविष्य में इसमें सुधार कैसे ला सकते हो?